International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 6; June 2016; Page No. 282-285

भारतीय परिदृष्य में वृद्धावस्था : एक विवेचन

डॉ0 तृप्ति मांझी

जनजातीय अध्ययन विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.), भारत।

प्रस्तावना

वृद्धावस्था वैश्विक स्थिति

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार यूरोप दुनियां का सबसे बूढ़ा महाद्वीप है, जहां वृद्धों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का पांचवा भाग है । वर्ष 2020 में उत्तरी अमेरिका में 23 प्रतिशत, पूर्वी एशिया में 17 प्रतिशत, 5 लैटिन अमेरिका में 12 प्रतिशत एवं दक्षिण एशिया में 10 प्रतिशत होने का अनुमान है और 2020 में जापान की कुल जनसंख्या में 31 प्रतिशत वृद्ध जनसंख्या के साथ विश्व का सबसे बूढ़ा देश होगा । वृद्धों की जनसंख्या की अधिकता वाले विश्व के शीर्ष दस देशों में चीन, भारत, इण्डोनेशिया, ब्राजील एवं पाकिस्तान सहित पांच विकास शील देश भी शामिल होगे इनके आलावा कोलम्बिया, मलेशिया, केन्या, थाइलैण्ड और धाना आदि विकासशील देशों में वर्ष 1990 से 2025 के बीच वृद्धों की संख्या बढ़ने की दर विकासित देशों की अपेक्षा सात–आठ गुना अधिक होगी। परिणाम स्वरूप विकासशील देशों में मात्र 35 वर्षों के अन्तराल में ही वृद्धों की संख्या 200 से 300 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।

वृद्धः जनांककीय परिदृश्य

यूनाइटेड नेशन्स, ग्लोबल एक्शन आन एजिंग (2007)[1] के अनुसार भारत एवं चीन में वृद्धों की संख्या 4.4 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, जब कि विश्व औसत 2.6 प्रतिशत है। वर्ष 2020 में भारत में कुल जनसंख्या का लगभग 14.20 करोड़ जनसंख्या वृद्धों की होगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन (2001)[2] के अनुसार वर्ष 2020 में पूरे विश्व में एक मिलियन से अधिक वृद्ध होंगे, जिसमे दो तिहाई केवल विकासशील देशों में होंगें।

तिवारी एस. (1997)[3] के अनुसार ''एक अनुमान के आधार पर 2035 तक एशियाई देशों में वृद्धों की दशा विचारणीय हो जाएगी, क्योंकि इन एशियाई देशों की कुल जनसंख्या की लगभग 7.25 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धों की होने की संभावना है।''

एक अध्ययन के अनुसार जहां 1950 में विश्व में 60 वर्ष व उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की संख्या 2050 लाख थी वहीं वर्ष 2000 में यह संख्या बढ़कर 6060 लाख हो गई और वर्ष 2050 तक वृद्धों की संख्या 20 लाख हो जाने की संभावना है।

भारत में वृद्धावस्था की स्थिति

वृद्धों की बढ़ती हुई जनसंख्या के इस गंभीर परिदृश्य में भारत जैसे विकासशील देश की स्थिति अत्यधिक चिंतनीय है, क्योंकि भारत में जनसंख्या वृद्धि दर अत्यधिक तीव्र गति से बढ़ रही है और इसी के साथ ही वृद्धों की जनसंख्या में भी वृद्धि हो रही है। भारत की जनगणना 1961 के अनुसार कुल जनसंख्या में वृद्धों की संख्या 5.6 प्रतिशत थी जो 2001 में बढ़कर 7.4 प्रतिशत हो गई। और वर्ष 2011 तक वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत बढ़कर 8.18 हो गया जो कि 2026 तक बढ़कर 12.4 प्रतिशत होने की संभावना है।

सेन्सस ऑफ इण्डिया (2011)[4] के अनुसार यदि वृद्धावस्था निर्भरता दर को देखें तो यहां 1961 में यह 10.9 प्रतिशत थी तो वहीं यह 2001 में बढ़कर 13.1 प्रतिशत थी साथ ही कुल वृद्ध जनसंख्या में से लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या अपनी दिन–प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए आश्रित है। लगभग 6.7 प्रतिशत वृद्ध पुरूष आर्थिक रूप से परस्पर दम्पत्तियों पर आश्रित है। 85 प्रतिशत अपने बच्चों पर एवं 2 प्रतिशत अपने पोत्र–प्रपोत्र पर तथा लगभग 6 प्रतिशत अन्य लोगों पर आश्रित हैं। लगभग 20 प्रतिशत से कम वृद्ध महिलाएं अपने पति पर और 70 प्रतिशत से अधिक अपने बच्चों पर एवं 3 प्रतिशत अपने पौत्र–प्रपौत्र पर तथा 6 प्रतिशत अन्य पर आश्रित हैं।

रन्धाव (1991)[5], एवं सिंगर (1968)[6], नायर (1980)[7], कर्वे (1953)[8] भारत एक कृषि प्रधान देश है। जिसमें लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। जहाँ की सामाजिक संरचना की केन्द्रिय धुरी एवं प्राथमिक इकाई परिवार है। इन परिवारों में संयुक्त परिवार ही मुख्य रूप से ग्रामों की विशेषता हैं। इस आधार पर परिवार के सभी सदस्य पारस्परिक कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों की एक व्यवस्था में बंधे रहते है। ऐसे परिवारों में घर के वृद्धों की स्थिति सम्मानजनक होती है। परिवार में इन्हें प्रेम आदर एवं सहयोग प्रदान किया जाता है। आर्थिक निर्भरता, रूग्णता, अक्षमता एवं आश्रितता की स्थिति में भी पर्याप्त देखभाल की जाती है। परन्तु वर्तमान संदर्भों में औद्योगिकीकरण पाश्चात्यीकरण एवं आर्थिक विकास के साथ ही परिवारों में वृद्धों की स्थिति में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हेाते हैं। जहाँ परिवार के स्थान पर द्वैतियक संस्थाओं व एजेन्सियों ने परिवार के प्रकार्यात्मक महत्व एवं आवश्यकता का स्थान ले लिया है तो वृद्धों की भूमिका एवं सम्मान में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है।

वृद्धावस्था

वृद्धावस्था की एक सर्वमान्य परिभाषा करना अत्यंत कठिन है। फिर भी सामाजिक संदर्भ में हम उस व्यक्ति को वृद्ध मानते है, जो अपने सक्रिय जीवन से निवृत्त हो चुका है। आर्थिक दृष्टिकोण से उस अवस्था को कहते है, जब एक व्यक्ति सक्रिय आर्थिक क्रियाओं से अवकाश प्राप्त कर लेता है। जबकि जैविक दृष्टिकोण से वृद्धावस्था आयु के बढ़ने के साथ शारीरिक निर्बलता की स्थिति है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वृद्धावस्था को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. कलानुक्रम वृद्धावस्था (Cronological Ageing)
2. भौतिक वृद्धावस्था या जैविक वृद्धावस्था (Physiological Ageing)
3. सामाजिक वृद्धावस्था (Social Ageing)

वृद्धावस्था एक वैश्विक प्रघटना है। भारत के संदर्भ में वृद्धावस्था के लिये 60 वर्ष की आयु निर्धारित की गया है। परन्तु प्रशासनिक सेवानिवृत्ति की आयु में पर्याप्त भिन्नता दिखायी देती है। यहां 58 वर्ष से 65 वर्ष की आयु सेवानिवृत्ति के लिये रखी गयी है, जिसमें 60 वर्ष केन्द्रिय कर्मचारियों, 65 वर्ष विश्वविद्यालयीन शिक्षकों तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की है।

खान (1997)[9] ने वृद्धावस्था की समस्याओं के आधार पर वृद्धावस्था को दो भागों में विभाजित किया है।

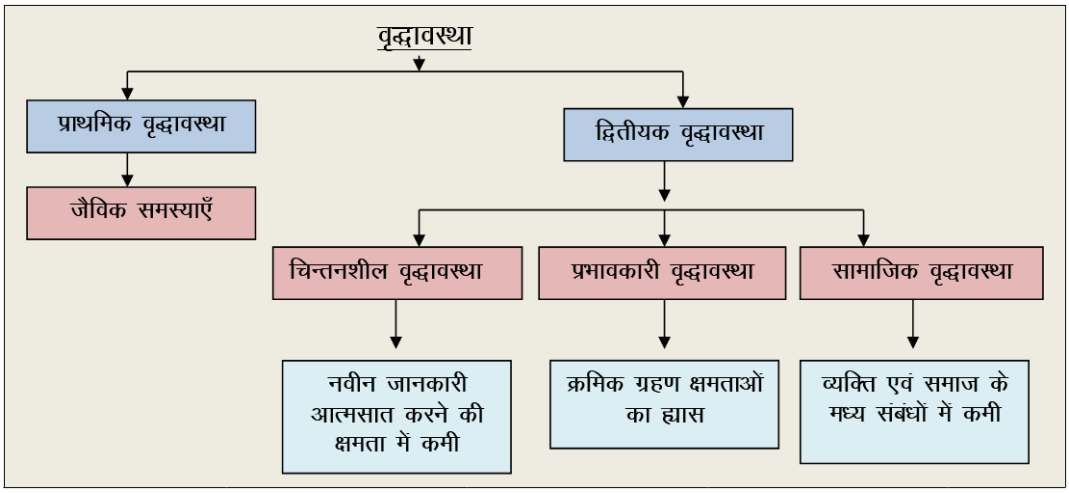

सारणी 1: वर्ष 2001 में विभिन्न राज्यों की कुल जनसंख्या में वृद्ध (60+) जनसंख्या की स्थिति

राज्य/केन्द्र शामिल राज्य	कुल जनसंख्या में वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत	संख्या (हजार में) विभिन्न राज्यों में 60 वर्ष एवं अधिक आयु का जनसंख्या वितरण				
		व्यक्ति	महिला	पुरूष	ग्रामीण	नगरीय
भारत	7.4	76622	38854	37768	57445	19178
आंध्र प्रदेश	7.6	5788	3030	2758	4506	1282
अण्डमान एवं निकोबार	4.9	17	8	10	13	4
अरूणाचल प्रदेश	4.5	50	23	26	46	4
असम	5.9	1560	760	801	1361	199
बिहार	6.6	5501	2579	2922	4966	535
चंडीगढ़	5.0	45	21	24	3	42
छत्तीसगढ़	7.2	1504	815	690	1271	234
दादर एवं नागर हवेली	4.0	9	5	4	7	2
दमन एवं द्वीप	5.1	8	5	3	4	4
देहली	5.2	720	353	366	43	677
गोवा	8.3	112	63	50	61	51
गुजरात	6.9	3499	1871	1628	2319	1180
हरयाणा	7.5	1584	789	795	1192	392
हिमाचल प्रदेश	9.0	548	277	271	510	37
जम्मू एवं कश्मीर	6.7	675	309	366	515	160
झारखण्ड	5.9	1579	791	787	1275	304
कर्नाटक	7.7	4062	2138	1924	2890	1172
केरल	10.5	3336	1851	1484	2479	857
लक्षद्वीप	6.1	4	2	2	2	2
मध्यप्रदेश	7.1	4281	2189	2092	3265	1016
महाराष्ट्र	8.7	8455	4522	3932	5709	2746
मणिपुर	6.7	145	72	73	102	43
मेघालय	4.6	106	52	54	86	20
मिजोरम	5.5	49	24	25	26	23
नागालैण्ड	4.5	90	40	51	81	9
ओड़िसा	8.3	3039	1536	1503	2684	355
पुदुचेरी	8.3	81	45	36	27	54
पंजाब	9.0	2192	1080	1112	1581	611
राजस्थान	6.7	3810	1981	1829	3025	786
सिक्किम	5.7	29	13	16	27	2
तमिलनाडु	8.8	5507	2772	2736	3223	2285
त्रिपुरा	7.3	233	120	113	191	42
उत्तर प्रदेश	7.0	11650	5475	6175	9625	2025
उत्तराखण्ड	7.7	654	328	327	523	131
प. बंगाल	7.1	5700	2916	2784	3808	1892

स्रोत : पापुलेशन सेन्सस 2001

भारत की कुल जनसंख्या में वृद्धों की जनसंख्या संबंधी उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि दादर एवं नागर हवेली, नागालेण्ड, अरूणाचल प्रदेश एवं मेघालय में वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत (क्रमशः 4.0, 4.5, 4.5, 4.6) कम है, जबकि ओड़िसा, पुदुचेरी, महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु, हिमालय प्रदेश, केरल में सर्वाधिक वृद्ध जनसंख्या प्रतिशत (क्रमशः 8.3, 8.3, 8.7, 9.0, 8.8, 9.0, 10.5) है। सर्वाधिक ग्रामीण क्षेत्र में वृद्ध जनसंख्या उत्तरप्रदेश में (9,6,25,000) है, जिसमें सर्वाधिक महिला वृद्ध (54,75,000) एवं पुरुष वृद्ध (61,75,000) है। परन्तु कुल जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्ध 10.5 प्रतिशत केरल राज्य में हैं। भारत की कुल जनसंख्या में सापेक्षिक रूप से सर्वाधिक वृद्ध (24,79,000) ग्रामीण क्षेत्र में है।

सारणी 2: वृद्ध जनसंख्या की कुल जनसंख्या में से दशकीय वृद्धि दर

दशक	कुल जनसंख्या में प्रतिशत परिवर्तन	वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत परिवर्तन
1951–61	+ 21.64	+ 23.9
1961–71	+ 24.80	+ 33.7
1971–81	+ 24.66	+ 33.0
1981–91	+ 23.87	+ 29.7
1991–2001	+ 21.54	+ 25.2
2001–2011	+ 17.60	प्रसारित नहीं।

स्रोत : पॉपुलेशन सेन्सस

वृद्धों जनसंख्या में दशकीय वृद्धि दर संबंधी सारणी क्रमांक–2 से स्पष्ट है कि 1951 से 1981 के मध्य कुल जनसंख्या के अनुपात में सर्वाधिक वृद्धि दर दर्ज की गयी है।

सारणी 3: भारत में वर्ष 2008 में विभिन्न आयु वर्गों में वृद्ध मृत्यु दर (लिंग एवं निवास क्षेत्र के आधार पर) (प्रति हजार में)

आयु वर्ग	कुल	पुरूष	महिला	ग्रामीण	नगरीय
60 – 64	22.5	26.5	18.4	23.9	18.7
65 – 69	33.5	39.5	27.9	34.9	29.5
70 – 74	54.3	61.5	47.6	57.1	46.3
75 – 79	79.4	86.6	72.4	83.7	68.1
80 – 84	116.9	125.5	109.3	119.7	109.0
85 +	197.4	201.2	194.2	201.5	186.2

स्रोत : सेंम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (SRS) : ऑफिस ऑफ द रजिस्टर जनरल इण्डिया

भारत में वर्ष 2008 में विभिन्न आयु वर्गों में वृद्ध मृत्यु दर (संबंधी सारणी क्र. 3) देखने से स्पष्ट होता है कि 60–64 आयु वर्ग में कुल 22.5 (प्रतिहजार) वृद्धों की मृत्यु होती है। जबकि सर्वाधिक 85 + आयु के वृद्धों में सर्वाधिक 200 (प्रति हजार में) मृत्यु दर दिखाई देती है। यहां यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि सांपेक्षिक रूप से वृद्ध महिलाओं की तुलना में वृद्ध पुरुषों में मृत्यु दर अधिक है।

आयु आधारित मृत्यु दर में केरल में तुलनात्मक रूप से वृद्ध मृत्यु दर दिल्ली, आसाम, मध्यप्रदेश आदि राज्यों की अपेक्षा कम है। यहां यह तथ्य उभरकर आता है कि वृद्धों में जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है इसका प्रमुख कारण चिकित्सकीय तकनीकी विकास एवं जनस्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के उपभोग की प्रकृत्ति में वृद्धि हुई है। आंकड़ो से यह भी तथ्य स्पष्ट होता है कि महिलाओं में जीवन प्रत्याशा अधिक दिखाई देती है जिसका प्रमुख कारण विभिन्न गंभीर रोग जैसे – हार्ट अटेक, केन्सर, स्ट्रोक, फेफड़ों का संक्रमण आदि महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक होते है जिसके परिणाम स्वरूप सापेक्षिक रूप से महिलाओं की आयु (जीवन प्रत्याशा) पुरुषों से अधिक है।

सारणी क्रमांक 4: वर्ष 2004 में वृद्ध जनसंख्या की आर्थिक निर्भरता की स्थिति संबंधी विवरण (वितरण प्रतिषत में)

भारत	लिंग	अन्यों पर आश्रित नहीं	अन्यो पर आंशिक निर्भरता	अन्यों पर पूर्ण निर्भरता
ग्रामीण	पुरूष	51	15	32
	महिला	14	12	72
नगरीय	पुरूष	56	13	30
	महिला	17	9	70

स्रोत : एन.एस.एस.ओ. (2004)

सारणी 5: वृद्धों की आर्थिक निर्भरता में सहायक व्यक्ति (संबंधों) की श्रेणी का विवरण (प्रतिशत में वितरण)

जनसंख्या उप समूह	सहायक व्यक्तियों की श्रेणी				
	दम्पत्ति पर	स्वयं के बच्चों पर	नाती–पोतों पर	अन्यों पर	प्रतिशत
ग्रामीण पुरूष	7	85	2	6	100
ग्रामीण महिला	16	75	3	6	100
कुल ग्रामीण व्यक्ति	13	78	3	6	100
नगरीय पुरूष	6	87	2	6	100
नगरीय महिला	19	71	3	7	100
कुल नगरीय व्यक्ति	15	76	3	6	100

स्रोत : एन.एस.एस.ओ. सिर्क्यन राउण्ड (2004)

भारत में वर्ष 2004 में वृद्ध जनसंख्या की आर्थिक निर्भरता की स्थिति एवं आर्थिक निर्भरता में सहायक व्यक्ति (संबंधों) की श्रेणी (सारणी क्रमांक 4 एवं 5) से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक (56 प्रतिशत) नगरीय वृद्ध पुरुष अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए किसी भी अन्य पर आश्रित नहीं हैं। जबकि सार्वाधिक चिन्ताजनक स्थिति ग्रामीण एवं नगरीय (क्रमशः 72 प्रतिशत, 70 प्रतिशत) दोनो ही क्षेत्रों में वृद्ध महिलाओं की है जिसमें वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए अन्य व्यक्तियों पर पूर्णतः आश्रित है, जो कि वृद्ध महिलाओं की गंभीर सोचनीय स्थिति को दर्शाता है। वृद्धों की आर्थिक निर्भरता के संबंधों में सर्वाधिक स्वयं के बच्चों पर निर्भरता है।

सारणी 6: वर्ष 2001 में विभिन्न आयु वर्गों में वृद्धों की अशक्तता के प्रकारों का वर्गीकरण

आयु वर्ग	असक्त व्यक्तियों की संख्या (हजार में)	अशक्तता की प्रकृति में				
		दृष्टि	वाक्	श्रवण	मानसिक	शारीरिक गतिशीलता
6.–69	1919	52	4	11	6	28
70–79	1233	52	3	14	4	27
80–89	476	51	2	16	3	27
90 +	147	49	2	28	4	28

स्रोत : जगणना (2001)

सारणी क्रमांक 7: 60+ आयु के वृद्ध व्यक्तियों में विभिन्न जीर्ण रोगों की जानकारी संबंधी विवरण (प्रति एक हजार व्यक्तियों में)

जीर्ण रोग की प्रकृति	ग्रामीण			नगरीय		
	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति
श्वांसी, कफ, तपेरिक	8	6	7	4	2	3
छाले (अल्सर)	37	54	44	30	24	27
अस्थि रोग	30	40	34	26	45	35
उच्च रक्त चाप	23	53	36	50	59	54
ह्रदय संबंधी रोग	95	59	80	165	162	164
मूत्र रोग	78	28	57	89	33	63
मधुमेह	30	52	40	68	36	53
केंसर	18	36	26	25	55	56

स्रोत : नेशनल सेमपल सर्वे (2004)

निष्कर्ष

वृद्धों में शारीरिक क्षमताओं की कमी, शारीरिक अशक्तता, जीर्ण व गंभीर रोगों की दषा में उनकी अन्यों पर आर्थिक निर्भरता स्थिति उत्पन्न होती है, परिणाम स्वरूप आज भारत में वृद्धों के प्रति दुर्व्यवहार की समस्या उभर रही है। बटुक सिल्विया (1974) व खान (1997) का मानना है कि ''नगरीय एवं औद्योगिक समाजों में आश्रित वृद्धों की आवश्यकताओं पर व्यय एवं पर्याप्त देखभाल को समस्या के रूप में लिया जाता है।'' विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि घर परिवार में वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार बढ़ने लगा हे। पारिवारिक दुर्व्यव्यहार से वृद्धों के शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है साथ ही अपमान, उपेक्षा, दुर्व्यवहार से अधिकांश लोग वृद्धावस्था को एक बीमारी मानने लगे है। भारत में औद्योगिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, नगरीकरण, पाश्चात्य जीवन शैली के अनुसरण तथा अनेक अन्य कारणों से परम्परागत मूल्यों में कमी आयी है जहां वृद्धों को घर का मुखिया के रूप में पर्याप्त सम्मान, देखभाल एवं उनके निर्णयों एवं अनुभवों को बल दिया जाता था, वहीं वर्तमान भारतीय सामाजिक परिदृश्य में वृद्धों को एक समस्या के रूप में लिया जाना लगा है जिसके परिणाम स्वरूप वृद्ध दुर्व्यवहार के शिकार होते है। हेल्प ऐज इंडिया [11] की एक रिपोर्ट के अनुसार 'भारत में एक मोटे अनुमान के आधार पर लगभग 40 प्रतिशत वृद्ध जो कि अपने परिवार के साथ रहते हैं, वे किसी न किसी प्रकार के दुर्व्यवहार का शिकार होते हैं और प्रति बारह में से केवल एक केस की रिपोर्ट दर्ज होती है'।

स्टेइनमेज एवं बाउण्ड (1979)[12] के अनुसार भारतीय संदर्भ में वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार की घटना को निर्भरता के ढ़ाँचे के अन्तर्गत देखा जाता है।

भारतीय परिदृश्य में वृद्धों की बढ़ती जनसंख्या, दशकीय वृद्धि, नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धों की स्थिति आर्थिक एवं शारीरिक अक्षमता एवं निर्भरता तथा वृद्धों पर होने वाले दुर्व्यवहार जैसी गंभीर एवं चिन्ताजनक स्थितियों के प्रति पारिवारिक, सामाजिक एवं संस्थागत सहायता तंत्र को अधिक संवेदनशील, अधिक सबल व क्रियाषील होने की आवश्यकता है। देश के नीति निर्माताओं द्वारा वृद्धों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की वर्तमान चुनौतियों के साथ ही भविष्य के लिये भी प्रभावशाली नीतियों/योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यूनाइटेड नेशन्स, ग्लोबल एक्शन आन एजिंग (2007)।
2. वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन (2001), एक्टिव एजिंग : फ्रॉम एविडेन्स टू एक्शन, जिनेवा।
3. तिवारी, संतोष (1997), दी अन्डर यूटीलाइदड मायनोरिटी, द पायोनियर।
4. रजिस्ट्रार जनरल, इण्डिया, सेन्नस ऑफ इण्डिया, (2001), एजिंग पॉपुलेशन ऑफ इण्डिया, एन एनालिसिस, ऑफ 2001 सेन्सस डेटा, नई दिल्ली।
5. रन्धावा, एम.एस. (1991), दी रूरल एण्ड अर्बन एण्ड : ए सोशियोलॉजिकल पर्सपेक्टिव, नेशनल बुक ऑर्गेनाइजेशन, नई दिल्ली।
6. सिंगर, मिल्टन (1968), ''दी इण्डियन जॉइन्ट फेमिली इन मोडर्न इन्डस्ट्री'' (सम्पाहित) स्ट्रक्चर एण्ड चेन्ज इन इण्डियन सोसायटी, एल्डिन पब्लिाशिंग कंपनी, शिकागो।
7. नायर, पी.के.बी. (1980), ''रोल ऑफ फेमिली इन एल्डर्लीकेयर'' रिसर्च एण्ड डेवेलपमेन्ट, जे 1, वाल्यु 2,(1)।
8. कर्वे, इरावती (1953), किनशिप, ऑर्गेनाइजेशन इन इण्डिया, डेक्कन कॉलेज पी.जी. रिसर्च इन्सटीट्यूट, पूना।
9. बटुक सिल्विया, जे. (1971), किनशिप एण्ड अर्बनाइजेशन, बर्कले युनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस।
10. खान, एम.जे. (1997), एल्डर्ली इन मेट्रोपॉलिस, इन्टर इण्डिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
11. हेल्प एज इण्डिया, रिपोर्ट
12. स्टेइनमेज एवं बाउण्ड (1979), एल्डर एब्यूज एण्ड फेमिली केयर, सेज पब्लिकेषन, न्यू देहली।
13. नेशनल सेम्पल सर्वे, सिक्सटीन राउण्ड, जनवरी–जून 2004।
14. सेन्ट्रल स्टेटिसटिक्स ऑफिस, मिनिस्ट्री ऑफ स्टेटिसटिक्स एण्ड प्रोग्राम इम्प्लीमेन्टेशन, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, ''सिचुएशन एनालिसिस ऑफ एल्डर्ली इन इण्डिया, जून 2011।